पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17 मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह e-mail-pawanprawah@gmail.com
वर्ष 04 अंक 06 लखनऊ। सोमवार 23 से 29 अक्टूबर-2017



www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com
पवन प्रवाह

# प्राणिक ऊर्जा : विशिष्ट उपचार

**लेखक डॉ. भरत राज सिंह**
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

**(भाग-22)**

पिछले 21 (इक्कीस) अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्त्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर में चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता हैः ऊर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में तथा मौलिक उपचार के लिए स्तर-I व विशिष्ट उपचार स्तर-II में प्रत्यक्ष ऊर्जा के लिए विजुअलाइजेशन व अवरूद्ध चक्र, औरिक ऊर्जा की अशुद्धिया, आभा और चक्रों के गूढ़ ज्ञान, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों को पढ़ने की जानकारी से पूर्णतः अवगत हुये थे। इस अंक में, सहज ज्ञान से आभा और चक्रों के पार्दर्शिता आदि के विषय मे क्रमशः आगे बताया गया है।

**क्रमशः...**

**18.2 पारदर्शिता बनाए रखनाः** जैसा कि औरिक ऊर्जा उपचार मे, हाथ पासिंग तकनीकों के साथ जब छिद्र और रिसाव को सील करते हैं, तब यह ऊर्जा स्वभाविक रूप मे उसकी प्रकृति के साथ-साथ हर समय खुले तौर से प्रवाहित करती रहती है और आप जिस काम के साथ जुड़े होते हैं, उससे खुद को दूर नहीं कर पाते है। हालांकि ऊर्जा प्रवाह के लिये, हाथ आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाला उपकरण हैं। अतः यह ध्यान रखें कि हाथों के पासिंग, छिद्र या रिसाव, आभा समाशोधन, चक्रों को अनवरोधित करना, ऊर्जा प्रवाह में सुधार और यहां तक कि हाथों के फैलाने के साथ आप अपने पूर्ण शक्ती लगा देते हैं। वास्तव में अपने पूरे अस्तित्व का उपयोग करते हुये हाथों से आपको पूरी ऊर्जा पाने के लिये खुलेपन से अभिनय करना चाहिए। इसके लिये आप जो ऊर्जा के पूरे क्षेत्र मे प्रवाहित कर रहे हैं, उस पर न केवल यह विचार करें कि यह अकेले हाथ चैनेलिंग है अथवा कुछ ऊर्जा क्षेत्र के साथ काम करने के लिये, हाथ की आत्म-चेतना को अलग करना आवश्यक है, जिसके लिये आपको अपने सांसारिक स्वयं के किसी विशेष पहलू को और उपचार तकनीक का अभ्यास करते हुए या अपने रोगी को पढ़ते समय एक स्पष्ट चैनल के रूप में काम करना चाहते हैं। आप जिन तकनीकों का अभ्यास कर रहे हैं या इसके लिये अपनी आँखों, हाथों आदि का उपयोग करते हुए अपने मरीज के आभा को पढ़ने या देखने का प्रयास करते हऐ, उसे ही पारदर्शिता कहा जाता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह चिकित्सा और इसकी सभी चिकित्सा तकनीकों को अंततः रोगी के पूरे अस्तित्व पर ऊर्जा मरहम लगाने की पूरी प्रक्रिया के साथ किया जाता है। इस स्तर पर दिए गए विशेष तकनीकों को सीखने और अभ्यास करने के लिए, इस गुणवत्ता को अपने आप में विकसित करें।

**19.0 आभा समाशोधनः** रोगी के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है कि ऊर्जा क्षेत्र में, ऊर्जा का प्रवाह मे रुकावट (हस्तक्षेप) या गलत तरीके से स्थिर, अस्वास्थ्यकर और अशुद्ध ऊर्जा, जो अपने सामान्य प्रवाह को रोक सकते हैं, से मुक्त किया जा सकता है। यदि आप अपने रोगी की आभा में ऐसी ऊर्जा की अशुद्धियों का पता लगाते हैं, तो उन्हें औरा क्लीयरिंग के रूप में जाना जाता है और ऊर्जा उपचार प्रक्रिया का उपयोग करके, अपने रोगी के क्षेत्र से बाहर निकाल दिया जा सकता है इस तकनीक को शरीर के विभिन्न क्षेत्रों में जहां सामान्यतः ये ऊर्जा दोष होते हैं, उपयोग किया जाता है साथ ही साथ चक्रों पर भी जहां इनका संकेत मिलता है। आभा समाशोधन हाथों का उपयोग करते हैं, विशेष रूप से उंगलियों द्वारा, ताकि ऊर्जा क्षेत्र की निचली परतों से अवांछनीय ऊर्जा को हटाया जा सके।

आभा समाशोधन करते समय, हाथों की विशेष रूप से हथेलियों को नीचे की तरफ किया जाता है-उन्हें रोगी के शरीर से दूर खीचते हैं, इसको ऐसा इसलिये करते हैं जिससे औरिक ऊर्जा की अशुद्धताओं को उन क्षेत्र से निकाल दिया जाय। यह प्रक्रिया जानबूझकर धीमी तरीके से किया जाता है तथा आभा समाशोधन के दौरान आपको इस अधिनियम पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपके अपने रोगी के क्षेत्र में जहां औरिक ऊर्जा की अशुद्धियों को दूर करने के लिए पता लगाया है, उनपर निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाते हैंः

पहले हाथ के हथेलियों को नीचेकर उन क्षेत्र पर ले जाये, साथ ही उंगलियों को मध्यम रूप से फैलाये, परंतु हाथ के गुज़रने के समय इसके अलावा अधिक होना चाहिए। उंगलियां सीधे बाहर परंतु हाथ के सीधान पर अथवा शायद उस स्तर से थोड़ा ऊपर खींचा होना चाहिए। हाथ को शरीर की सतह से आगे बढ़ाने की गति की शुरुआत में (जब पहली परत समाशोधन करते समय) लगभग 1 इंच ऊपर होता है और गति के अंत में सम्भवतः शरीर के 15 इंच ऊपर, परंतु यह प्रक्रिया संपूर्ण गति मे लगभग 5 सेकंड लेती है। हाथ को फिर थोड़ा आराम दे सकते हैं, ताकि उंगलियों को थोड़ा नीचे की ओर झुकाया जा सके और जिससे हाथ फिर से शरीर के 1 इंच ऊपर एक बार पुनः वापस की स्थिति में आ जाय। हाथों को ऊपरी गति देते समय, यह कल्पना करना, इरादा करना और समझना है कि औरिक क्षेत्र की अशुद्धताओं को हटाया जा रहा है। आपके हाथ और उसकी खुली उंगलियों का अपना औरिक क्षेत्र है, जो भी एक आकर्षक उपकरण के रूप में या एक आकर्षक औरीक जाल के रूप मे कार्य करता है, जो रोगी के क्षेत्र से हानिकारक ऊर्जा जो उसकी शरीर की सतह के पास रहते हैं, को अलग करता है । वे आपके हाथ में चिपक जाते है (मुख्यतः हथेली और अंगुलियों के नीचे), और हाथ को गति ऊपर की ओर देते समय, वे रोगी के क्षेत्र से अलग हो जाते हैं। शरीर के अलावा, वे अपनी शक्ति (चार्ज) और मरीज के क्षेत्र में चिपकने की क्षमता को खो देते हैं । अशुद्धियों समाप्त हो जाती है, मृत के रूप में बन जाते हैं और इससे रोगी पर कोई और असर भी नहीं पड़ता। जैसा कि आप ऊपर दिए गए प्रक्रिया में देख चुके हैं, अपने हाथों और उंगलियों में ऊर्जा को अपने उंगलियों के आसपास के क्षेत्र मे बढ़ते हुए और मजबूत होते महसूस करते हैं, और जब आप अपने हाथ को बाहर की तरफ ले जाते हैं- कल्पना करें, इसे आकर्षित करें, खींचें जैसे कि आप रोगी की अवांछनीय ऊर्जा को हटा दें रहे है। अपनी उक्त प्रक्रिया में हाथ को आगे गति देते समय अपनी विजुअलाइज़ेशन क्षमता को भी साथ जोड़े और रोगी के क्षेत्र से अशुद्ध ऊर्जा को अलग करें और निकालें। आप आपकी अपनी अंतर्चक्षु या भौतिक आंखों से देखेगे कि अपने हाथ को गति देते हुये व हाथ की अंगुलियों को फैलाते हुये, मरीज के क्षेत्र की अवांछनीय ऊर्जा के पकड़ लेते है और उन्हें निकाल सकते हैं।

**शेष अगले अंक भाग-23 मे पढ़े...**